कृषक समाचार

kvklodipurarwal@gmail.com

कृषि विज्ञान केन्द्र, अरवल

बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर

वर्ष 2016 | अंक – 02 | अप्रैल–जून, 2016

संरक्षक :

डा. अजय कुमार सिंह

कुलपति, बि.कृ.वि., सबौर, भागलपुर

मार्गदर्शक :

डा. एस. के. राय

निदेशक, कृषि प्रौद्योगिकी अनुप्रयोग अनुसंधान संस्थान (ATARI)

जोन II आई.सी.ए.आर., (कोलकता)

डा. आर. के. सोहाने

निदेशक प्रसार शिक्षा

प्रकाशक :

डा० राकेश कुमार

वरीय वैज्ञानिक-सह-प्रधान

09934263033

सम्पादक मंडल :

डा० सी० एन० चौधरी

वैज्ञानिक, शस्य विज्ञान

09430872108

डा० के० पी० सिंह

वैज्ञानिक , उद्यान

09934634302

डा० कविता डालमिया

वैज्ञानिक, गृह विज्ञान

09431805020

डा० बिभा कुमारी

वैज्ञानिक, पशु चिकित्सा विज्ञान

08987387327

वैज्ञानिक, पौधा रोग

09450707592

हर कदम, हर डगर
किसानों का हमसफर
भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद
Agrisearch with a human touch

संदेश

डा० अजय कुमार सिंह
कुलपति, बि.कृ.वि.,
सबौर, भागलपुर

बिहार के माननीय मुख्यमंत्री जी के मार्गदर्शन में राज्य अपने कृषि रोड मैप के बलबूते इन्द्रधनुषी क्रान्ति लाने की तैयारी में है और इस दिशा में निरंतर सफलता मिलती जा रही है। कृषि रोड मैप के तहत कृषि प्रसार का मुख्य उद्देश्य कृषि ज्ञान का कौशल में परिवर्तन करना होगा जिसे अपनाकर किसान अपनी आय में बढ़ोत्तरी कर सकेंगे। कृषकों की सहभागिता की कड़ी को और मजबूत करने के लिए विश्वविद्यालय द्वारा प्रत्येक शनिवार को किसानों के द्वार किसान चौपाल का आयोजन किया जा रहा है। मुझे पूर्ण विश्वास है कि इससे किसान भाई अधिक से अधिक लाभ उठा सकेंगे।कृषि के विभिन्न उद्यम जैसे कि फसल उत्पादन, मवेशीपालन, वानिकी, मशरुम उत्पादन इत्यादि को एक साथ इस प्रकार समायोजित किया जा रहा है कि वे एक दूसरे के पूरक हो जिससे संसाधनों की क्षमता, उत्पादकता एवं लाभप्रदता में पर्यावरण को सुरक्षित रखते हुए वृद्धि की जा सके। विश्वविद्यालय का प्रयास किसानों से एक रिश्ता कायम करने का है ताकि तकनीकी के प्रसार को नया आयाम दिया जा सके। इस दिशा में विश्वविद्यालय अन्तर्गत के सभी कृषि विज्ञान केन्द्रों द्वारा किसान चौपाल लगाये जा रहे हैं। साथ ही इन केन्द्रों द्वारा विडियो कान्फ्रेन्सिंग के माध्यम से किसानो को विश्वविद्यालय के मुख्यालय से जोड़ा जा रहा है, जिसकी सराहना राष्ट्रीय स्तर पर हो रही है।

मुझे विश्वास है कि पत्रिका का यह अंक आप किसान भाई–बहनों का विश्वविद्यालय से बने रिश्ते को और मजबूती देगा।

प्रकाशक की कलम से

कृषि विज्ञान केन्द, अरवल द्वारा प्रकाशित कृषक समाचार का यह अंक हस्तगत करते हुए अपार हर्ष हो रहा है।इस माध्यम से केन्द्र कृषि प्रचार की अपनी गतिविधियों को आपके समक्ष समयानुसार प्रभावी तरीके से रखने में सक्षम होगा।इस अंक में केन्द्र की आगामी गतिविधियों की जानकारी के साथ.साथ सम सामयिक कृषिगत कार्य.कलापों की जानकारी को हमने संक्षिप्त रूप में रखने का प्रयास किया है।

बंधुओ! प्रतियोगिता के इस युग में कृषि में भी चुनौतियाँ कम नही है।मौसम की बेरूखी, उत्पादो की गुणवत्ता, उचित बाजार एवं मूल्य, कृषि कार्य हेतू नैसर्गिक संसाधनो का क्षरण, मृद्धा/जल मौसम की बेरूखी, गुणवत्ता पूर्ण बीजों का चुनाव, कृषिगत उत्पादों का भंडारण, उत्पादो का गुणवत्तायुक्त प्रसंस्करण एवं इन प्रसंस्कृत उत्पादों हेतू उचित मूल्य तथा बाजार की समस्या जैसी चुनौतियों से हमारा कृषि जगत रू.बरू होता रहा है। ऐसी परिस्थिति में कृषक भाईयों का ध्यान मृदा स्वास्थ्य संरक्षण, भू.जल का समुचित उपयोग, रसायनिक उर्वरकों की अनुसंशित मात्रा का फसलों में प्रयोग, बीजोपचार तथा रसायनिक दवाओं के न्यूनतम (आवश्यकतानुसार) प्रयोग जैसी तकनीकों की ओर आकृष्ट करना चाहूँगा। समय पर कृषि कार्यों को आज सम्पन्न करने हेतू यांत्रीकीकरण की नितांत आवश्यकता है। इससे न केवल कृषि बल्कि कृषिगत उप.उत्पादों; पशु–पालन/मत्स्य पालन/मुर्गी पालन/बकरी पालन/सुकर पालन जैसे व्यवसायों का समावेश कृषि विधा के साथ.साथ करना होगा। यानि कि हमें समेकित कृषि प्रणाली की ओर अग्रसर होने की जरूरत है ताकि उत्पादों के साथ.साथ उप.उत्पादों का प्रयोग करते हुए अपनी मृदा और जल नैसर्गिग संसाधनो को संरक्षित करते हुए कृषिगत व्यवसाय से अधिक से अधिक लाभ प्राप्त किया जा सके।

राकेश कुमार, कार्यक्रम समन्वयक, कृषि विज्ञान केन्द, अरवल

कृषि विज्ञान केन्द्र, अरवल द्वारा आयोजित किये जाने वाले चौपाल कार्यक्रम

तिथि	ग्राम	प्रखण्ड	प्रभारी वैज्ञानिक	तिथि	ग्राम	प्रखण्ड	प्रभारी वैज्ञानिक
02.04.2016	जयपुर	कलेर	डा. राकेश कुमार	14.05.2016	रोहाई	करपी	डा. के. पी. सिंह
09.04.2016	खैरा	कलेर	डा. राकेश कुमार	28.05.2016	सरौती	अरवल	डा. निशांत प्रकाश
16.04.2016	करण	बिगहाकलेर	डा. सी. एन. चौधरी	04.06.2016	परियारी	करपी	डा. निशांत प्रकाश
30.04.2016	बलीदाद	कलेर	डा. सी. एन. चौधरी	11.06.2016	मुशरी	करपी	डा. कविता डालमिय
07.05.2016	रामपुर चौरम	अरवल	डा. के. पी. सिंह	18.06.2016	पखरपुर	अरवल	डा. बिभा कुमारी
				25.06.2016	मनिकपुर	कुर्था	डा. बिभा कुमारी

अप्रैल :

- गेहूँ की कटाई के बाद खरपतवार रोग एवं कीट नियंत्रण हेतु खेत की ग्रीष्मकालीन जुताई प्रारंभ करें।
- गरमा धान एवं सब्जियों में आवश्यकतानुसार निकाई–गुड़ाई एवं सिंचाई तथा नेत्रजनीय उर्वरक से उपरिवेशन करें।
- चारे के लिए मक्का, ज्वार, बाजरा और लोबिया की बुआई एवं पिछले माह बोयी फसल में सिंचाई करें।
- रबी फसलों की कटाई, दौनी एवं भण्डारण करें।
- इस माह के प्रथम पखवारे में ही गरमा मूँग, मक्का एवं चारा फसलों की बुआई अवश्य पूरी करें।
- गरमा फसलों में सिंचाई का ध्यान हमेशा रखें। खड़ी फसलों मूँग तिल एवं प्याज आदि में आवश्यक सिंचाई कर नमी बनाये रखें।
- गेहूँ के बाद मूँग की बुआई 15 अप्रैल तक अवश्य पूरी कर लें।
- संकर नस्ल के पशुओं में थैलिरियोसिस से बचाव के टीक लगवायें।
- गलघोंई, लंगड़ा बुखार की बीमारी से बचाव के टीके अवश्यक लगावये।
- आम मटर दाने की आकार का होने पर डायमेथोएट 2 मि ली०/ ली० तथा प्लानोपिबस 1 मिली/4.5 ली पानी की दर से छिड़काव करें।

मई :

- खरीफ धान के बीच की व्यवस्था करें। 20 मई के बाद आगत धान के बिचड़े गिरावें। बीच गिराने के पूर्व बिजोपचार अवश्य कर लें।
- धान के खेतों में जैविक खाद देकर तैयारी कर लें।
- ग्रीष्मकालीन सब्जियों में प्रति सप्ताह सिंचाई करें। जून में बोने हेतु बरसाती प्याज के लिए बीजस्थली की तैयारी करें।
- खाली खेत को मिट्टी पलटने वाले हल से ग्रीष्मकालीन जुताई कर खुला छोड़ दें।
- कम्पोस्ट के गड्ढ़ों में नमी हेतु पानी देकर गढ्ढे को मिट्टी से ढ़क दें।
- हरी खाद के लिए ढैचा या मूँग लगायें।
- हल्दी आदि की बुआई प्रथम वर्षा के बाद प्रारंभ कर दें। ओल की भी बुआई करें।
- मई माह के अन्त में बसन्तकालीन मक्का की कटाई करें एवं दानों को सुखाकर भण्डारित करें।
- गरमा खड़ी फसल (मक्का, चारा, सूर्यमूखी, तिल एवं मूँग आदि) में आवश्यक सिंचाई कर नमी बनयें रखें। साथ–ही–साथ आवश्यक यूरिया खाद का उपरिवेशन करें।
- सिंचाई के बाद माह के अन्त तक बरसीम की कटाई कर लें।
- चारे के लिए बोई गई चरी एवं बहुवर्षीय घासों की कटाई करें।
- चिचड़ियाँ एवं पेट के कीड़ों से पशुओं के बचाव का उचित प्रबंधन करें।
- टमाटर के अधिक उत्पादन की स्थिति में टमाटर प्रसंस्करण मशीनों का इस्तेमाल कर उसके परिरक्षित उत्पाद तैयार करें।
- अनाज की बोरियों को दीवार से लगभग 75 सेमी० दूर रखें एवं कमरे का 4/5 हिस्सा ही भंडारण करें।
- यदि अनाज का भण्डारण बीज के लिए करना हो तो मैलाथियान पाउडर (5 प्रतिशत) 250 ग्राम प्रति क्विंटल की दर से मिलायें परन्तु ध्यान रहे कि इस प्रकार उपचारित बीज का मनुष्यों को खाने या पशुओं के दाने आदि के काम में कभी प्रयोग न करें।

जून :

- 15 जून तक अगहनी धान का बीज गिरा दें। रोपण के 15–20 दिनों बाद नील हरित शैवाल का 12–15 किग्रा प्रति हे० की दर से खेत में लगी पानी की सतह पर छिड़काव करें।
- कीट–व्याधियों से ग्रीष्मकालीन मक्का की सुरक्षा करें।
- गरमा मूंग की फलियों को तोड़ ले तथा हरी खाद हेतु उसके पौधो को मिट्टी पलटने वाले हल से जमीन में गाड़ दे। मूंग, उरद एवं अरहर की बुआई करें।
- खरीफ चारा (ज्वार, बाजरा, मेथ, ट्रेटाकलाई, बोड़ा, दीनानाथ इत्यादि) की बुआई प्रारंभ कर दें।
- ग्रीष्मकालीन सब्जी की निकाई–गुड़ाई एवं फसल सुरक्षा पर ध्यान रखें। बरसाती प्याज एन० 53 का बीज गिरा दें। वर्षा प्रारम्भ होते ही लम्बी अवधि के तैयार बिचड़ों की रोपनी शुरू करें। ग्रीष्मकालीन सब्जियों पर फफूंदनाशक दवा का छिड़काव करें।
- पशुओं के प्रमुख रोग एन्थ्रेक्स, ब्लैक क्वार्टर (डकहा) एवं एच० एस० (गलघोंटू) से बचाव के लिए पशुओं को टीके लगावें।
- जून माह में बोने हेतु बरसाती प्याज के लिए बीज स्थली की तैयारी करें।
- दलहनी फसलों का बैविस्टिन 2 ग्राम/किलो बीज की दर से बीजोपचार करें। दो दिनों के बाद राइजोबियम कल्चर से उपचार करें।
- दीमक की समस्याग्रस्त खेतों में कार्बेरिल या क्लोरपायरीफास दवा का प्रयोग करें।

हल्दी की उन्नत खेती

उन्नत प्रभेद : राजेन्द्र सोनिया, आर0 एच0–5, सगुना, सुवर्णा, सुरिमा सुगंधम, रोमा सुरोमा, रंगा, रश्मि इत्यादि

बोने का समय : 15 मई से 31 मई तक **बीज दर :** 20–25 क्विंटल / हेक्टेयर

बीज प्रकन्द का आकार : 30 से 35 ग्राम जिसमें 4–5 स्वस्थ कलियाँ हो।

बीजोपचार : 2.5 ग्राम इण्डोफिल, एम–45/0.1 प्रतिशत वेविस्टीन का घोल बनाकर उसमें आधे घंटे तक उपचारित करें।

रोपाई की दूरी : 30 25 से.मी., 5–6 से.मी गहराई में।

छपनी : बुआई के बाद शीशम का हरी पत्तियों से 5 से.मी. परत द्वारा खेतों को ढक दें।

खाद एवं उर्वरक : कमपोस्ट–25 से 30 टन सड़ी गोबर की खाद / हे0, नेत्रजन–120–150 किलो. ग्राम / हे, स्फूर–50–60 किलोग्राम / हे0। पोटाश 80–100 किलोग्राम / हे, जिंक सल्फेट 20–25 किलोग्राम / हे0।

सिंचाई : सामान्यतः सिंचाई की आवश्यकता नहीं होती है। गाँठ बनने के समय सितम्बर–अक्टुबर में एक सिंचाई अवश्य करें।

फसल चक्र : हल्दी–प्याज, हल्दी–गेहूँ, हल्दी–मूंग।

पौधा संरक्षण– प्रकंद विगलन रोग:–0.25 प्रतिशत मैंकोजेब / 0.1 प्रतिशत कार्बान्डाजिम का दो से तीन छिड़काव 15 दिन के अंतराल पर करें।

खुदाई एवं भण्डारण : खुदाई बुआई के 210–230 दिनों के बाद किया जा सकता है। जब पत्ते पिले होकर पूर्ण रूप से सूख जाते है तब खुदाई करके गाठों को अच्छी तरह साफ एवं ठंढी जगह एवं गड्ढों में भण्डारित करना चाहिए।

उपज : 250–300 क्विं / हे0।

मूँग: गरमा दलहन का मुख्य श्रोत

मूँग एक दलहनी फसल है जो प्रोटीन का एक अच्छा श्रोत है। इसमें लगभग 22–23 प्रतिशत प्रोटीन पाया जाता है। इसे दाना के रूप में दाल, हलवा, मिठाई एवं विभिन्न व्यंजनों में व्यवहार किया जाता है। इसमें राइबोफ्लेविन एवं थायमीन भी काफी मात्रा में पाई जाती है।

उन्नत प्रभेद :-

बुआई का समय	उन्नत प्रभेद	तैयार होने की अवधि (दिनों में)	औसत उपज क्विंटल / हे.	विशेष गुण
15 फरवरी से 15 मार्च	एच०यू०एम–16	65–70	15–16	रोगरोधी एवं मिश्रित खेती के लिए उपयुक्त फलियों का एक साथ पकना, खरीफ फसल हेतु भी उपयुक्त
10 से 31 मार्च	पूसा विशाल	70–75	15–18	बड़ा दाना एवं रोगरोधी
15 मार्च 10 अप्रैल	सोना	60–65	9–10	फलियों का एक साथ पकना
01 से 31 मार्च	पी०एस०–16	70–75	10–12	सम्पूर्ण बिहार में उगाने योग्य
15 मार्च 10 अप्रैल	एस०एम०एल०–668	65–70	15–20	बड़ा दाना एवं पीली शिरा चित्ती विषाणु रोग के लिए सहिष्णु

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना

प्रधानमंत्री फसल बीमा योजना फसल बीमा के लिए सरकार की ओर से अब तक की सबसे बड़ी सहायता किसानों के लिए सबसे कम बीमा की दर – एक फसल–एक दर (खरीफ: 2 प्रतिशत, रबी रू 1.5 प्रतिशत, व्यावसायिक और बागवानी फसलें रू 5 प्रतिशत) ।पूर्ण सुरक्षा दृ दावे की राशि में कोई कमी या उच्चतम सीमा नहीं। गन्ने के किसानों के लिए प्रभावी नीतिगत फसले – बकाया राशि 21,000 करोड़ से घटाकर 2,500 करोड़ रुपये, निर्यात शुल्क में बढ़ोतरी, एथेनॉल ब्लेंडिंग में 250 प्रतिशत की वृद्धि । प्राकृतिक आपदा राहत मानदंड रू मुआवजा डेढ़ गुना बढ़ा, पात्रता 50 प्रतिशत से घटाकर 33 प्रतिशत की गई, सरकारी खरीद में मानकों में ढ़ील, ऋण के भुगतान और समयसीमा में परिवर्तन, डीजल में सब्सिडी के साथ बीजों के लिए सब्सिडी में 50 प्रतिशत की वृद्धि ऋण पहुंच को आसान बनाने के लिए कृषि ऋण सीमा बढ़ाकर 8.5 लाख करोड़ रुपये की गई। विश्व व्यापार संगठन में किसानों की दीर्घकालीन हितों की सुरक्षा ।बीमा के लिए अपने निकटतम बैंक शाखा, कृषि सहकारिता समिति, बीमा कम्पनी www-agri&insurance.gov.in या उनके एजेंट से सम्पर्क करें।

पशु पोशण: कब और कैसे

पशु की समस्त आवश्यकताओं की पूर्ति करने तथा उसे स्वस्थ रखने के लिए सभी आवश्यक पोषक तत्व सही अनुपात एवं उचित मात्रा में उपलब्ध होना चाहिए। एक आदर्श राशन चारे अथवा चारे–दाने को वह सम्मिश्रण है जो पशु की समस्त आवष्यकताओं को उसके शरीर भार के अनुसार, उचित मात्रा में देने पर पूर्ण कर देता है।

पशु पोषण के कुछ मूल तथ्य:–

- पशु को दिन में दो बार चारा–दाना (8–10 घंटे का अवकाश) देना चाहिए।
- जौ, चना, मटर, मक्का, गेहूँ का दाना भली प्रकार से दला हुआ दानेदार रूप में हो न कि आटा बना हो। खली को दाना के साथ भिगोकर दें।
- दाना पहले खिलायें उसके बाद सूखा या हरा चारा दें। चारे के डंठल एवं जड़ों को चारे की मशीन से काट कर उपयोग करने से 30–40 प्रतिशत तक की बचत हो जाती है।
- प्रत्येक पशु को 2.5–3.0 कि0ग्रा0 शुष्क पदार्थ प्रति 100 कि0ग्रा0 शरीर भार के लिए होना चाहिए। ये शुष्क पदार्थ सूखे चारे, हरे चारे व दाना मिश्रण से दिये जाते हैं।
- दाना मिश्रण तथा भूसा में 90% शुष्क पदार्थ होते हैं, हरे चारे से 30% शुष्क पदार्थ जब कि रसीले चारे, बरसीम, रिजका, आदि से 20–25% शुष्क पदार्थ प्राप्त होते हैं।
- प्रत्येक पशु को जीवन निर्वाह के लिए कम से कम 1.0 किलो दाना मिश्रण के अलावा पेटभर सूखे व हरे चारे देनी चाहिए। सूखे व हरे चारे की मात्रा में क्रमशः एक एवं दो के अनुपात में रखना चाहिए।
- स्थानीय उपलब्धता को ध्यान में रखकर चारे व दाने की व्यवस्था करनी चाहिए।
- कृषक अपने घर पर उपलब्ध चारे दाने को उचित मात्रा में संगठन व सही समय पर देकर अधिकतम लाभ उठा सकते हैं।

दाना मिश्रण का संगठन

सामग्री	मात्रा प्रतिशत में
मोटे अनाज / अनाज	35–40
खली	25–50
कृषि आधारित उपउत्पाद	20–30
खनिज लवण	2
नमक	1

- जीवन निर्वाह राशन के अतिरिक्त गाय को दूध उत्पादन के लिए 3 लीटर दूध पर प्रति दिन 1 किलो दाना–मिश्रण तथा भैंसों को 2.5 लीटर दूध पर 1 कि0ग्रा0 दाना तथा बकरी को दूध उत्पादन का आधा मात्रा में दाना दिया जाता है।
- गर्भित पशु में बच्चे के विकास हेतु 6 माह या इससे अधिक अवधि की गर्भवती बछिया व देशी गाय को अतिरिक्त आहार के रूप में 1 कि0ग्रा0 दाना तथा भैंस में 1.5 कि0ग्रा0 दाना देनी चाहिए।
- आहार को अधिक रूचिकर एवं सुपाच्य बनाने के लिए पशु को कभी–कभी गुड़ अथवा शीरा खिलायें। प्रजनक सांड़ों को उसके प्रजनन हेतु उनकी निर्वाह आवश्यकता से 25–30% तक अतिरिक्त राशन और देना चाहिए।
- जब भी दाने में परिवर्तन करें, धीरे–धीरे करें, अचानक परिवर्तन करने से पशु के पाचनतंत्र पर प्रतिकूल प्रभाव पड़ सकता है।
- एक गाय को प्रतिदिन 50–60 ग्राम खनिज मिश्रण या 100 कि0ग्रा0 भार पर प्रतिदिन 8–10 नमक ग्राम देना चाहिए।
- 10 कि0ग्रा0 दुधारू पशुओं के लिए एक दिन एवं औसत राशन 10–12 कि0ग्रा0 हरा चारा और 58–6 कि0ग्रा0 भूसा और 3.5 कि0ग्रा0 दाना मिश्रण है।
- दुधारू पशुओं को समय–समय पर कैल्शियम युक्त औशधियाँ अवश्य देते रहना चाहिए। जिससे मिल्क फीवर, दूध की कमी आदि होने का भय नहीं रहता है।

कृषि विज्ञान केन्द्र की झलकियाँ

कृषि विज्ञान केन्द्र, अरवल, बिहार कृषि विश्वविद्यालय, सबौर, भागलपुर
kvklodipurarwal@gmail.com
द्वारा प्रकाशित तथा दीक्षाआर्ट एण्ड प्रिन्टस, पटना, email: dikshaart2010@gmail.com # 9431436534 द्वारा मुद्रित